



TUK KUMARI (AARADHYA)

08 Jan 2026

06:30 AM

ATKA BAGODAR GIRIDIH

Model: Web-MyKundli

Order No: 121403301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)

ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322

9507643885

dewdatkumarpandey@gmail.com

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 7-08/01/2026
दिन _____: बुध-गुरुवार
जन्म समय _____: 06:30:00 घंटे
इष्ट _____: 59:56:23 घटी
स्थान _____: ATKA BAGODAR GIRI
राज्य _____: JHARKHAND
देश _____: India

अक्षांश _____: 24:04:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:13:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 06:43:20 घंटे
वेलान्तर _____: -00:06:10 घंटे
साम्पातिक काल _____: 13:53:44 घंटे
सूर्योदय _____: 06:31:26 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:14:37 घंटे
दिनमान _____: 10:43:11 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 23:31:15 धनु
लग्न के अंश _____: 22:12:14 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: धनु - गुरु
राशि-स्वामी _____: सिंह - सूर्य
नक्षत्र-चरण _____: पू०फाल्गुनी - 4
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: सौभाग्य
करण _____: तैतिल
गण _____: मनुष्य
योनि _____: मूषक
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: वनचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: टू-टुनटुन
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मकर

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	पौष	18
पंजाबी	संवत : 2082	पौष	25
बंगाली	सन् : 1432	पौष	23
तमिल	संवत : 2082	मार्गड़ी	24
केरल	कोल्लम : 1201	धनु	24
नेपाली	संवत : 2082	पौष	24
चैत्रादि	संवत : 2082	माघ	कृष्ण 5
कार्तिकादि	संवत : 2082	पौष	कृष्ण 5

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 4
तिथि समाप्ति काल _____ : 06:52:48
जन्म तिथि _____ : 5
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : मघा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 11:56:24 घंटे
जन्म योग _____ : पू०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग _____ : आयुष्मान
योग समाप्ति काल _____ : 18:33:36 घंटे
जन्म योग _____ : सौभाग्य
सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
करण समाप्ति काल _____ : 06:52:48 घंटे
जन्म करण _____ : तैतिल
भयात _____ : 46:24:00
भभोग _____ : 61:09:58
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 4 वर्ष 9 मा 6 दि

घात चक्र

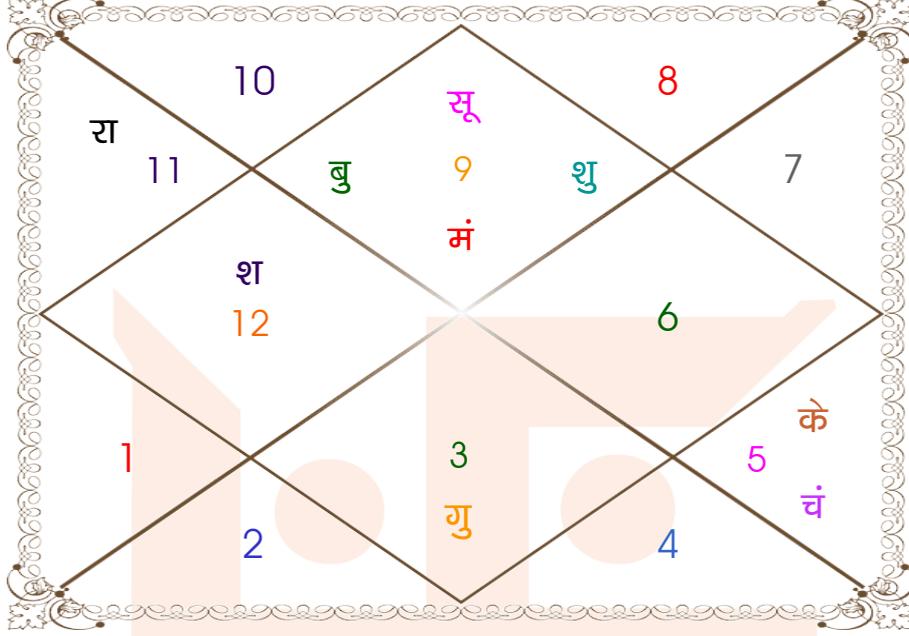
मास _____ : ज्येष्ठ
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : मूल
योग _____ : धृति
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : धनु
चन्द्र _____ : वृश्चिक
मंगल _____ : मकर
बुध _____ : तुला
गुरु _____ : कुम्भ
शुक्र _____ : मीन
शनि _____ : वृश्चिक
राहु _____ : मेष

HEMRITU JYOTISH KENDRA

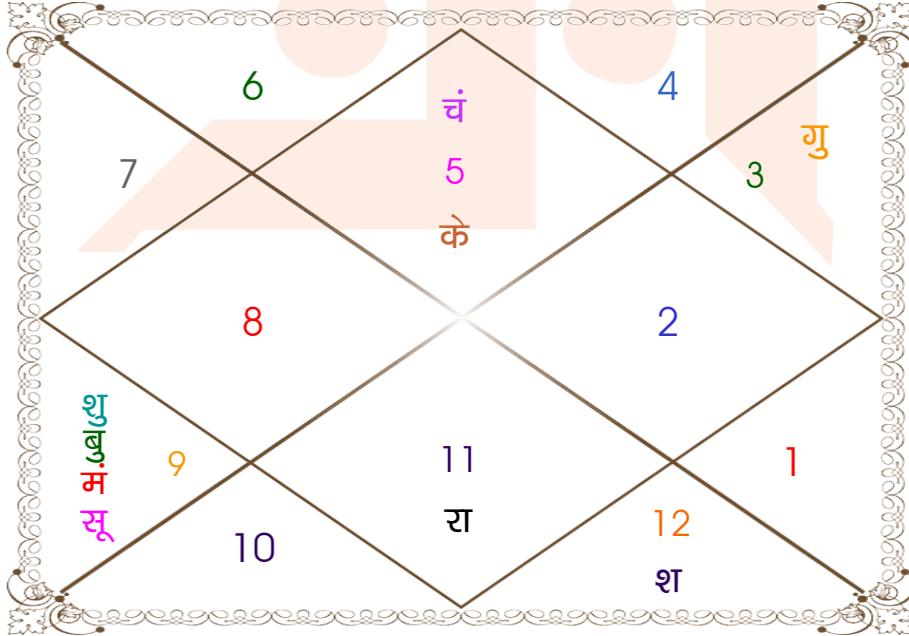
DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)

ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322

9507643885

dewdatkumarpandey@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

श		गु
रा		के चं
शु ल मं	बु सू	

लग्न कुंडली

गु	श	रा
चं के	ल	सू मं बु थु

विंशोत्तरी
शुक्र 4वर्ष 9मा 6दि
शुक्र

08/01/2026

16/10/2130

शुक्र	15/10/2030
सूर्य	14/10/2036
चन्द्र	15/10/2046
मंगल	15/10/2053
राहु	15/10/2071
गुरु	15/10/2087
शनि	16/10/2106
बुध	16/10/2123
केतु	16/10/2130

योगिनी

उल्का 1वर्ष 5मा 4दि

उल्का

08/01/2026

14/06/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	08/01/2026
भ्रामरी	14/08/2026
भद्रिका	14/06/2027

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)

ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322

9507643885

dewdatkumarpandey@gmail.com

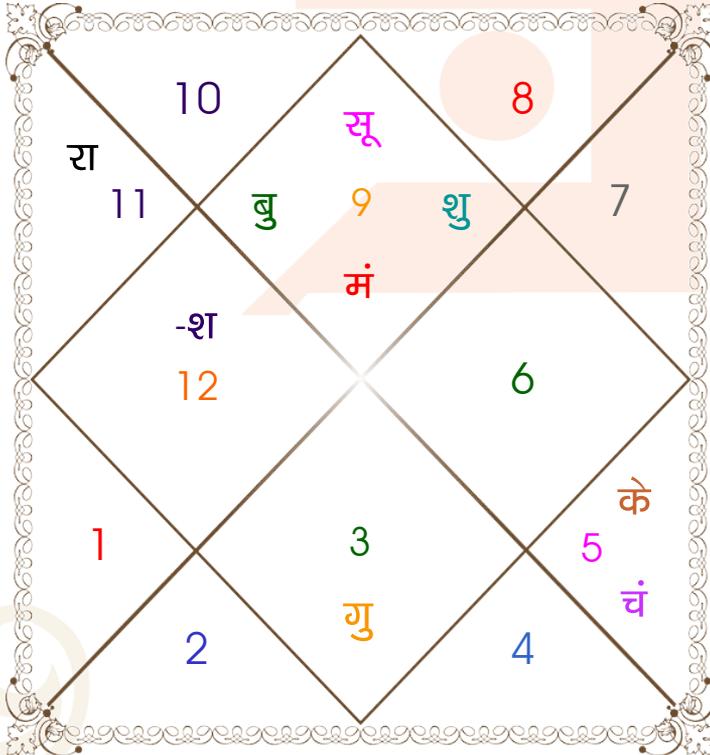
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	22:12:14	358:05:23	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	---
सूर्य			धनु	23:31:15	01:01:08	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	शनि	मित्र राशि
चंद्र			सिंह	23:29:19	12:57:52	पूर्वाषाढा	4	11	सूर्य	शुक्र	शनि	मित्र राशि
मंगल	अ		धनु	23:52:43	00:46:15	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	शनि	मित्र राशि
बुध	अ		धनु	15:19:13	01:34:07	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	सम राशि
गुरु	व		मिथु	26:11:55	00:08:05	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	केतु	शत्रु राशि
शुक्र	अ		धनु	23:50:38	01:15:29	पूर्वाषाढा	4	20	गुरु	शुक्र	शनि	सम राशि
शनि			मीन	02:23:35	00:04:08	पूर्वाषाढा	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
राहु			कुंभ	16:03:51	00:00:43	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	शुक्र	मित्र राशि
केतु			सिंह	16:03:51	00:00:43	पूर्वाषाढा	1	11	सूर्य	शुक्र	सूर्य	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	03:33:03	00:01:21	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	---
नेप			मीन	05:23:08	00:00:58	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	---
प्लूटो			मक	08:42:44	00:01:52	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
दशम भाव			तुला	06:19:40	--	चित्रा	--	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	--

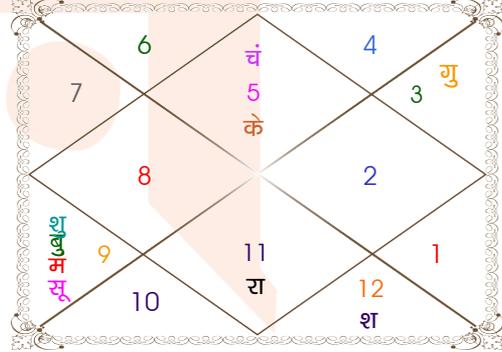
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:20

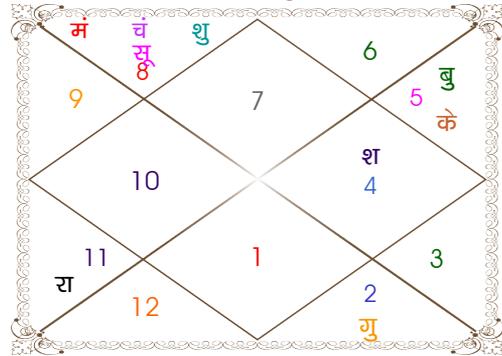
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)

ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322

9507643885

dewdatkumarpandey@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 09:33:29	धनु 22:12:14
2	मकर 09:33:29	मकर 26:54:43
3	कुम्भ 14:15:57	मीन 01:37:12
4	मीन 18:58:26	मेष 06:19:40
5	मेष 18:58:26	वृष 01:37:12
6	वृष 14:15:57	वृष 26:54:43
7	मिथुन 09:33:29	मिथुन 22:12:14
8	कर्क 09:33:29	कर्क 26:54:43
9	सिंह 14:15:57	कन्या 01:37:12
10	कन्या 18:58:26	तुला 06:19:40
11	तुला 18:58:26	वृश्चिक 01:37:12
12	वृश्चिक 14:15:57	वृश्चिक 26:54:43

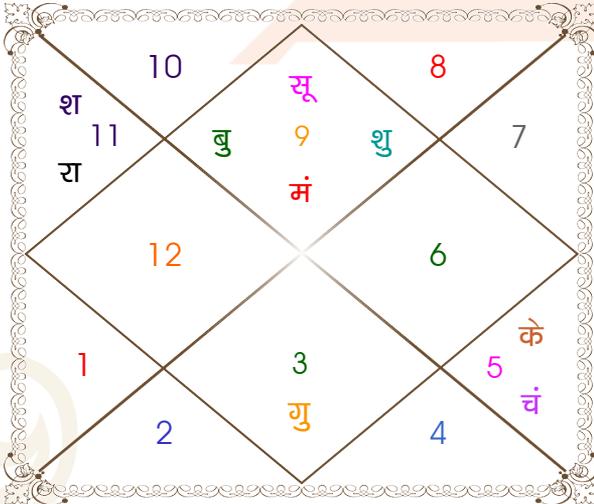
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	22:12:14
2	मकर	27:29:35
3	मीन	03:57:22
4	मेष	06:19:40
5	वृष	03:25:37
6	वृष	27:35:14
7	मिथुन	22:12:14
8	कर्क	27:29:35
9	कन्या	03:57:22
10	तुला	06:19:40
11	वृश्चिक	03:25:37
12	वृश्चिक	27:35:14

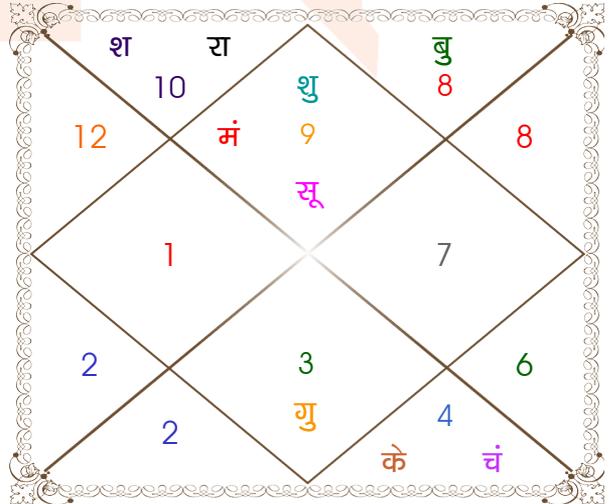
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 4 वर्ष 9 मास 6 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
08/01/2026	15/10/2030	14/10/2036	15/10/2046	15/10/2053
15/10/2030	14/10/2036	15/10/2046	15/10/2053	15/10/2071
00/00/0000	सूर्य 02/02/2031	चंद्र 15/08/2037	मंगल 13/03/2047	राहु 27/06/2056
00/00/0000	चंद्र 03/08/2031	मंगल 16/03/2038	राहु 31/03/2048	गुरु 20/11/2058
00/00/0000	मंगल 09/12/2031	राहु 15/09/2039	गुरु 06/03/2049	शनि 26/09/2061
00/00/0000	राहु 02/11/2032	गुरु 14/01/2041	शनि 15/04/2050	बुध 15/04/2064
00/00/0000	गुरु 21/08/2033	शनि 15/08/2042	बुध 13/04/2051	केतु 03/05/2065
08/01/2026	शनि 03/08/2034	बुध 14/01/2044	केतु 09/09/2051	शुक्र 03/05/2068
शनि 15/10/2026	बुध 09/06/2035	केतु 15/08/2044	शुक्र 08/11/2052	सूर्य 28/03/2069
बुध 15/08/2029	केतु 15/10/2035	शुक्र 15/04/2046	सूर्य 16/03/2053	चंद्र 27/09/2070
केतु 15/10/2030	शुक्र 14/10/2036	सूर्य 15/10/2046	चंद्र 15/10/2053	मंगल 15/10/2071

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
15/10/2071	15/10/2087	16/10/2106	16/10/2123	16/10/2130
15/10/2087	16/10/2106	16/10/2123	16/10/2130	00/00/0000
गुरु 02/12/2073	शनि 18/10/2090	बुध 14/03/2109	केतु 13/03/2124	शुक्र 14/02/2134
शनि 15/06/2076	बुध 27/06/2093	केतु 11/03/2110	शुक्र 13/05/2125	सूर्य 15/02/2135
बुध 21/09/2078	केतु 06/08/2094	शुक्र 09/01/2113	सूर्य 18/09/2125	चंद्र 15/10/2136
केतु 27/08/2079	शुक्र 06/10/2097	सूर्य 15/11/2113	चंद्र 19/04/2126	मंगल 16/12/2137
शुक्र 27/04/2082	सूर्य 18/09/2098	चंद्र 17/04/2115	मंगल 15/09/2126	राहु 15/12/2140
सूर्य 14/02/2083	चंद्र 19/04/2100	मंगल 13/04/2116	राहु 04/10/2127	गुरु 16/08/2143
चंद्र 15/06/2084	मंगल 29/05/2101	राहु 31/10/2118	गुरु 09/09/2128	शनि 09/01/2146
मंगल 22/05/2085	राहु 04/04/2104	गुरु 05/02/2121	शनि 19/10/2129	00/00/0000
राहु 15/10/2087	गुरु 16/10/2106	शनि 16/10/2123	बुध 16/10/2130	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 4 वर्ष 9 मा 28 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शनि	शुक्र - बुध	शुक्र - केतु	सूर्य - सूर्य	सूर्य - चंद्र
08/01/2026	15/10/2026	15/08/2029	15/10/2030	02/02/2031
15/10/2026	15/08/2029	15/10/2030	02/02/2031	03/08/2031
00/00/0000	बुध 11/03/2027	केतु 09/09/2029	सूर्य 20/10/2030	चंद्र 17/02/2031
00/00/0000	केतु 10/05/2027	शुक्र 19/11/2029	चंद्र 30/10/2030	मंगल 27/02/2031
00/00/0000	शुक्र 29/10/2027	सूर्य 10/12/2029	मंगल 05/11/2030	राहु 27/03/2031
00/00/0000	सूर्य 20/12/2027	चंद्र 15/01/2030	राहु 21/11/2030	गुरु 20/04/2031
00/00/0000	चंद्र 15/03/2028	मंगल 08/02/2030	गुरु 06/12/2030	शनि 19/05/2031
00/00/0000	मंगल 15/05/2028	राहु 13/04/2030	शनि 23/12/2030	बुध 14/06/2031
08/01/2026	राहु 17/10/2028	गुरु 09/06/2030	बुध 08/01/2031	केतु 25/06/2031
राहु 14/05/2026	गुरु 04/03/2029	शनि 16/08/2030	केतु 14/01/2031	शुक्र 25/07/2031
गुरु 15/10/2026	शनि 15/08/2029	बुध 15/10/2030	शुक्र 02/02/2031	सूर्य 03/08/2031
सूर्य - मंगल	सूर्य - राहु	सूर्य - गुरु	सूर्य - शनि	सूर्य - बुध
03/08/2031	09/12/2031	02/11/2032	21/08/2033	03/08/2034
09/12/2031	02/11/2032	21/08/2033	03/08/2034	09/06/2035
मंगल 11/08/2031	राहु 27/01/2032	गुरु 11/12/2032	शनि 15/10/2033	बुध 16/09/2034
राहु 30/08/2031	गुरु 11/03/2032	शनि 26/01/2033	बुध 03/12/2033	केतु 04/10/2034
गुरु 16/09/2031	शनि 02/05/2032	बुध 08/03/2033	केतु 23/12/2033	शुक्र 25/11/2034
शनि 06/10/2031	बुध 18/06/2032	केतु 25/03/2033	शुक्र 19/02/2034	सूर्य 10/12/2034
बुध 24/10/2031	केतु 07/07/2032	शुक्र 13/05/2033	सूर्य 08/03/2034	चंद्र 05/01/2035
केतु 01/11/2031	शुक्र 31/08/2032	सूर्य 28/05/2033	चंद्र 06/04/2034	मंगल 23/01/2035
शुक्र 22/11/2031	सूर्य 16/09/2032	चंद्र 21/06/2033	मंगल 27/04/2034	राहु 11/03/2035
सूर्य 28/11/2031	चंद्र 14/10/2032	मंगल 08/07/2033	राहु 18/06/2034	गुरु 21/04/2035
चंद्र 09/12/2031	मंगल 02/11/2032	राहु 21/08/2033	गुरु 03/08/2034	शनि 09/06/2035
सूर्य - केतु	सूर्य - शुक्र	चंद्र - चंद्र	चंद्र - मंगल	चंद्र - राहु
09/06/2035	15/10/2035	14/10/2036	15/08/2037	16/03/2038
15/10/2035	14/10/2036	15/08/2037	16/03/2038	15/09/2039
केतु 17/06/2035	शुक्र 15/12/2035	चंद्र 09/11/2036	मंगल 27/08/2037	राहु 06/06/2038
शुक्र 08/07/2035	सूर्य 02/01/2036	मंगल 27/11/2036	राहु 28/09/2037	गुरु 18/08/2038
सूर्य 14/07/2035	चंद्र 02/02/2036	राहु 11/01/2037	गुरु 27/10/2037	शनि 13/11/2038
चंद्र 25/07/2035	मंगल 23/02/2036	गुरु 21/02/2037	शनि 29/11/2037	बुध 29/01/2039
मंगल 02/08/2035	राहु 18/04/2036	शनि 10/04/2037	बुध 30/12/2037	केतु 02/03/2039
राहु 21/08/2035	गुरु 06/06/2036	बुध 23/05/2037	केतु 11/01/2038	शुक्र 02/06/2039
गुरु 07/09/2035	शनि 02/08/2036	केतु 10/06/2037	शुक्र 15/02/2038	सूर्य 29/06/2039
शनि 27/09/2035	बुध 23/09/2036	शुक्र 31/07/2037	सूर्य 26/02/2038	चंद्र 14/08/2039
बुध 15/10/2035	केतु 14/10/2036	सूर्य 15/08/2037	चंद्र 16/03/2038	मंगल 15/09/2039

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)

ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322

9507643885

dewdatkumarpandey@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 2, 8
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

HEMRITU JYOTISH KENDRA

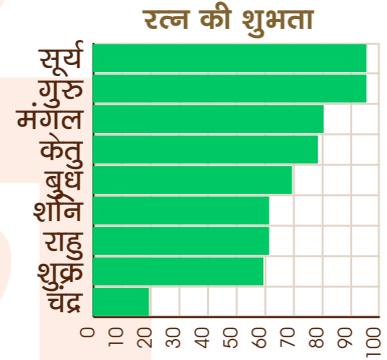
DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	95%	स्वास्थ्य, भाग्योदय
पुखराज	गुरु	95%	दम्पति, स्वास्थ्य, सुख
मूंगा	मंगल	80%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख, कम खर्च
लहसुनिया	केतु	78%	भाग्योदय, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	69%	स्वास्थ्य, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	61%	सुख, धन, पराक्रम
गोमेद	राहु	61%	पराक्रम, सुख
हीरा	शुक्र	59%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन
मोती	चंद्र	19%	नेष्ट भाग्य, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	15/10/2030	83%	0%	80%	75%	95%	72%	67%	67%	84%
सूर्य	14/10/2036	100%	31%	86%	69%	100%	44%	47%	47%	66%
चंद्र	15/10/2046	100%	44%	80%	75%	95%	59%	61%	47%	66%
मंगल	15/10/2053	100%	31%	92%	56%	100%	59%	61%	47%	84%
राहु	15/10/2071	83%	0%	67%	69%	95%	66%	67%	73%	66%
गुरु	15/10/2087	100%	31%	86%	56%	100%	44%	61%	61%	78%
शनि	16/10/2106	83%	0%	67%	75%	95%	66%	73%	67%	66%
बुध	16/10/2123	100%	0%	80%	81%	95%	66%	61%	61%	78%
केतु	16/10/2130	83%	0%	86%	69%	95%	66%	47%	47%	91%

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/01/2026-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/12/2102-29/11/2105	-----	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

सम
अशुभ
सम
शुभ
अशुभ

क्षेत्र

सुख
दुर्घटना
बदनामी
व्यावसाय
व्यय

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)

ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322

9507643885

dewdatkumarpandey@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगी तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगी। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपके पति का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगी। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। इसके प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी परन्तु इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु जैसे अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगी तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)

ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322

9507643885

dewdatkumarpandey@gmail.com

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।



HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)
 ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322
 9507643885
 dewdatkumarpandey@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में सूर्य, चन्द्र और मंगल के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान

करें।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)

ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322

9507643885

dewdatkumarpandey@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील, धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरों से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरों के लिए

शुभ रहेंगी।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीड़ित रहेंगे। आपकी प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)

ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322

9507643885

dewdatkumarpandey@gmail.com

शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान्, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन, वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(08/01/2026 - 15/10/2030)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा को 08/01/2026 आरम्भ होकर 15/10/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र प्रथम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जिसकी सामान्यतया दो राशियाँ हैं- वृष और तुला। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह मीन राशि में उच्च का तथा कन्या राशि में निम्न का होता है। यह आनन्द, प्रेम-संबंध, स्वाद, फैशन डिजाइनिंग तथा जीवन के आनन्द का द्योतक है। यह आपकी कुण्डली के प्रथम भाव में स्थित होकर सप्तम भाव को देख रहा है और इस पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। प्रथम भाव, जिसमें यह स्थित है, शारीरिक गठन, रूप, आकार, स्वास्थ्य, शक्ति और ऊर्जा, व्यक्तित्व, समृद्धि, सद्गुण और जीवन के प्रति सकारात्मक सोच का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशेश शुक्र प्रथम भाव में स्थित है। यह शारीरिक स्तर, स्वास्थ्य, शक्ति और ऊर्जा का द्योतक है। इसकी दशा के दौरान आप खुशहाल और स्वस्थ जवीन व्यतीत करेंगे। कोई बड़ी घटना या दुर्घटना आपको परेशान नहीं करेगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र लग्न में स्थित है जो जीवन के अच्छे पहलुओं का द्योतक है। आप भद्र,, प्रसन्नचित्त तथा भावुक होंगे। शुक्र लग्न से आपकी कुण्डली के सप्तम भाव को देख रहा है जिसके फलस्वरूप आपका भविष्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आप इस दशा काल में अपनी चल तथा अचल संपत्ति में बिना किसी कठिनाई के वृद्धि कर पाएँगे।

व्यवसाय :

आप कला पारखी तथा मनोरंजनप्रिय होंगे। गीत, संगीत तथा नाटक में आपकी अभिरुचि होगी और आप इत्र तथा फूल इत्यादि के शौकीन होंगे। व्यवसाय के लिए कला का चयन कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

शुक्र की लग्न में स्थित होकर सप्तम भाव, जो जीवन साथी का भाव है, पर दृष्टि आपका विवाह सुनिश्चित करती है। विपरीत लिंग के लोग आपके आकर्षक तथा करिश्माई व्यक्तित्व के कारण आपकी तरफ खिंचेंगे। आपका पारिवारिक जीवन बहुत ही आनन्ददायक और उत्साहपूर्ण होगा और आपके बच्चे बहुत सुन्दर होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह दशा काल शिक्षा के लिए अनुकूल है।

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)

ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322

9507643885

dewdatkumarpandey@gmail.com

**अंतर्दशा :- शुक्र - शनि
(08/01/2026 - 15/10/2026)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 08/01/2026 को प्रारंभ हुई थी और वद 15/10/2030 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 08/01/2026 को प्रारंभ होकर 15/10/2026 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है।

तृतीय भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 6, 10, 1 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

पारिवारिक मामलों में यह अंतर्दशा अशुभ हो सकती है। रिश्तेदार और मित्र आपसे अप्रसन्न रह सकते हैं। एकाकी जीवन आपको अच्छा लगेगा। वात और बलगम का कोई रोग हो सकता है। सुस्ती और संवेदनशीलता से त्रस्त हो सकते हैं। मन में नकारात्मक विचार आएं। मन को प्रसन्न रखना लाभदायक रहेगा।

- शिवजी की उपासना प्रतिदिन करें।
- पीपल को जल अर्पित करें।
- भोजन करने से पूर्व पहला कौर गाय को दें।
- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।

**अंतर्दशा :- शुक्र - बुध
(15/10/2026 - 15/08/2029)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 08/01/2026 को प्रारंभ हुई थी और वद 15/10/2030 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 15/10/2026 जो आपके लिए 15/08/2029 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

प्रथम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के 7वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप ज्ञानवान होंगे। ज्ञान में वृद्धि के लिए फिर से अध्ययन प्रारंभ कर सकते हैं। मानसिक उत्कृष्टता और हाज़िर जवाबी में वृद्धि होगी। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है।

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)
ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322
9507643885
dewdatkumarpandey@gmail.com

**महादशा :- सूर्य
(15/10/2030 - 14/10/2036)**

सूर्य की महादशा 15/10/2030 को आरंभ और 14/10/2036 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य लग्न में स्थित है। सूर्य स्वास्थ्य, पिता, आत्मा, राजकीय सम्मान का प्रतिनिधित्व करता है जबकि प्रथम भाव चरित्र, स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और सुख का द्योतक है। अतः इस दशा में आपका स्वास्थ्य, सम्पत्ति, शक्ति तथा प्रभुत्व उत्तम होंगे।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य इस दशा में उत्तम रहेगा। किन्तु, शरीर में अत्यधिक ताप होने के कारण आप खसरा आदि संक्रामक रोगों के शिकार हो सकते हैं। अन्यथा आप हृष्टपुष्ट और शक्तिशाली रहेंगे।

सम्पत्ति :

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी और आप धनी तथा समृद्धिशाली होंगे। आप अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करेंगे और अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आप धन तथा जीवन के सारे सुखों से सम्पन्न होंगे। आपको आपके पिता से लाभ हो सकता

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)

ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322

9507643885

dewdatkumarpandey@gmail.com

है।

व्यवसाय :

आप इस दशा में यश और ख्याति प्राप्त करेंगे। आप अपने कार्यों में सफल होंगे और इच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त करेंगे। नौकरीपेशा लोगों के कार्य में परिवर्तन हो सकता है। आपको कुछ अप्रत्याशित लाभ हो सकता है या आपका स्थानान्तरण अथवा कार्य-स्थान में परिवर्तन हो सकता है। आप प्रशासनिक कार्यों, व्यापार अथवा सरकारी कार्यों में बहुत अच्छा कर सकते हैं। आपमें प्रशासकीय योग्यता तथा अथक परिश्रम की क्षमता है। आप चिकित्सा तथा लेखा, कोषागार आदि से संबन्धित कार्यों का सुन्दर संचालन कर सकते हैं। आप बड़ी संस्थाओं, निगमों आदि के प्रबंधक, निदेशक, विक्रय-प्रबंधक आदि के लिए अत्यन्त योग्य हैं। सोने, तांबे तथा रत्नों का व्यवसाय आपके लिये उपयुक्त है।

परिवार (कुटुम्ब) :

आपको आपकी सन्तानों से सुख मिलेगा। आपके परिवार में किसी शिशु का जन्म हो सकता है। दाम्पत्य जीवन में कुछ तनाव हो सकते हैं जिन पर धैर्य तथा सहिष्णुता से नियंत्रण किया जा सकता है। आपकी माता प्रभावशाली होंगी और उन्हें सट्टे तथा निवेश से लाभ का सुअवसर मिलेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को आर्थिक लाभ होगा जबकि बड़ों को कठिन परिश्रम करना होगा। किन्तु उन्हें शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी तथा वे संवादपटुता आदि से लाभ प्राप्त करने में सफल होंगे।

शिक्षा :

आपकी योग में रुचि रहेगी और आप धार्मिक प्रवचन करेंगे या उनकी व्यवस्था करेंगे। आपकी राजनीति में रुचि हो सकती है। आप में विभिन्न सामाजिक व राजनीतिक कार्यों के आयोजन की अद्भुत क्षमता है। आपके उग्र स्वभाव के कारण आपकी अन्यों के साथ शत्रुता हो सकती है, हालाँकि आप दयालु-हृदय हैं।

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)

ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322

9507643885

dewdatkumarpandey@gmail.com

**अंतर्दशा :- सूर्य - सूर्य
(15/10/2030 - 02/02/2031)**

आपके लिए सूर्य की महादशा 15/10/2030 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 02/02/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप प्रभावशाली, सक्रिय और उद्यमी होंगे। आप महत्वाकांक्षी हैं और सत्ता से अनुराग रखते हैं। इस अंतर्दशा में आप अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने में सफल होंगे और नाम भी खूब कमाएंगे। नेतृत्व शक्ति के कारण आपका सम्मान होगा। न्यायप्रिय होने के कारण आप प्रशंसा प्राप्त करने योग्य कार्य करेंगे जिनसे आपके व्यक्तित्व का विकास होगा। प्रसन्नचित रहने और आशावादी दृष्टिकोण के कारण आपकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी।

पिता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। उनकी जायदाद में वृद्धि होगी। माता की लोकप्रियता बढ़ेगी और उन्हें सब कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। आपके भाई-बहनों के धन में वृद्धि होगी। आपकी संतान शिक्षा में यश प्राप्त करेगी। सूर्य की सप्तम भाव पर दृष्टि के कारण दांपत्य जीवन में कुछ मतभेद संभव हैं मगर इनका समाधान धैर्य और सहनशीलता द्वारा हो सकता है। भागीदारों के साथ भी कुछ मतभेद पनप सकते हैं। राजनीति में भाग लेने वालों के लिए समय उत्तम है।

इस अंतर्दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पित्तविकार, सिरदर्द और कार्यक्षमता में कमी आदि से कष्ट संभव है। इन सब से बचने के लिए गायत्री मंत्र का जाप लाभदायक रहेगा।

HEMRITU JYOTISH KENDRA

DEWDAT PANDEY (MANI)

ATKA, (GT ROAD) BAGODAR, GIRIDIH, JHARKHAND PIN-825322

9507643885

dewdatkumarpandey@gmail.com